उग्रवादी आन्दोलन (EXTREMIST MOVEMENT) ①

(1906 से 1918 तक)

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के दूसरे चरण की शुरुआत उग्रवादी राजनीति के उदय के साथ होती है। प्रथम चरण में कॉंग्रेस पर उदारवादियों का प्रभुत्व था जिन्हें अँग्रेजों की न्यायप्रियता तथा वैधानिक आन्दोलन में विश्वास था। वे शांतिपूर्ण वातावरण के अन्तर्गत वैधानिक तथा कानूनी साधनों द्वारा राजनीतिक एवं प्रशासकीय सुधारों की प्राप्ति करना चाहते थे। सुधारवादी विचारधारा का प्रभाव कॉंग्रेस पर 1905 ई० तक तथा कुछ-कुछ उसके बाद भी, बना रहा। लेकिन 19 वीं शताब्दी के अन्तिम भाग में तथा 20 वीं शदी के प्रारंभ में कुछ ऐसी घटनाएँ घटी जिनसे नरम दल के सुधारक और शांतिवादी नीतियों के प्रति भारतीय नवयुवकों में एक प्रकार की प्रतिक्रिया उत्पन्न हो गई। उनके दृष्टिकोण तथा मनोवृत्ति में आमूल परिवर्तन होने लगे। अंग्रेजों की न्यायप्रियता से उनका विश्वास उठ गया और वे वैधानिक साधनों तथा कॉंग्रेस की भिक्षावृत्ति की नीति से ऊब गए। अतः उन्होंने उग्र साधनों को अपनाये जाने का समर्थन किया जिसके कारण राष्ट्रीय आन्दोलन में लाल-बाल-पाल जैसे नेताओं का उदय हुआ। सन 1897 ई० में बाल गंगाधर तिलक ने कहा कि, "पिछले 12 वर्षों से हम गला फाड़कर चिल्ला रहे हैं कि सरकार हमारी बात सुने। किंतु चिल्लाने का सरकार पर उतना ही असर पड़ा कि जितना मच्छर की आवाज का। अब हमें उग्र एवं वैधानिक तरीकों से अपनी शिकायतों को उनके कानों में डालना चाहिए। लोकमान्य तिलक का मत था कि "भारत की राजनीतिक मुक्ति अनुनय एवं विनय और निवेदनों से न होकर दृढ़ कथन एवं प्रत्यक्ष कार्यवाही से ही सम्भव है अतः राजनीतिक अधिकारों के लिए लड़ना होगा। तिलक, विपिन-चन्द्र पाल तथा लाला लाजपत राय के नेतृत्व में उदारवादियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन को एक नया मोड़ दिया। अब यह केवल मध्यम वर्ग एवं शिक्षित वर्ग तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि उसने जन आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। भारतीय राजनीति पर उग्रवादियों का आधिपत्य 1919 ई० अर्थात् महात्मा गाँधी के पदार्पण तक बना रहा। अतः 1906 से 1919 ई० की अवधि को उग्रवादी आन्दोलन का युग कहा जाता है।

उग्रवादी आन्दोलन के उदय के कारण (Causes of the rise of Extremist Movement):- उग्रवादी आन्दोलन के उदय के प्रमुख कारण निम्नलिखित है:—

① **कॉंग्रेस की माँगों की उपेक्षा**:- 1885 के बाद से कॉंग्रेस ने प्रति वर्ष अपने अधिवेशनों

में परिषद के विस्तार, निर्वाचन, शासन नियंत्रण संबंधी अधिकार, परिषद के कार्य क्षेत्र में वृद्धि इत्यादि की माँगे प्रस्तुत की। परन्तु सरकार ने कांग्रेस की माँगों की ओर कोई ② ध्यान नहीं दिया। लालालाजपत राय के शब्दों में "शिकायतें दूर करने और रियायतें प्राप्त करने के बीस वर्षों के कम-अधिक प्रयत्नों के फलस्वरूप उन्हें रोटी के स्थान पर पत्थर ही प्राप्त हुए हैं।

② उदारवादियों की पद्धति से असंतोष :- उदारवादियों ने वैधानिक तथा शांतिपूर्ण प्रार्थना पत्र, स्मृति पत्र भेजने की नीति अपनायी थी जिसके तथ्यपूर्ण परिणाम न निकले। उदारवादियों की राजनीतिक भिक्षावृति की नीति से युवक वर्ग निराश हो गया था और उग्र आन्दोलन की आवश्यकता महसूस की जाने लगी।

③ प्राकृतिक प्रकोप :— अभी अकाल का घाव भरा नहीं था कि बंबई प्रेसिडेंसी में 1897-98 ई० में प्लेग का प्रकोप हो गया। पूना के पास भयंकर प्लेग फैला जिसमें सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार । लाख 73 हजार व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। महामारी को रोकने के लिए तथा रोगियों के सहतार्थ सरकार द्वारा उठाए गए कदम से गहरा क्षोभ तथा असंतोष फैला। सरकार ने अंग्रेजों को जिम्मेदारी सौंप दी लेकिन उत्साह के कमी के कारण वे पूर्णतः असफल रहे। इसके अतिरिक्त, सरकार ने निसंदेह अनेक ठोस कदम उठाए, लेकिन उन्हें चालाकी तथा सुस्ती से लागू नहीं किया गया। प्लेग कमिश्नर रैंड (Rand) ने सैनिकों को सेवाकार्य सौंपा और उन्हें घरों में घुसने, निरीक्षण करने और रोगग्रस्त व्यक्तियों को अस्पताल पहुँचाने का अधिकार दिया। जिससे कट्टर हिंदुओं की धार्मिक भावना को गहरी चोट लगी। कई स्थानों पर दंगे शुरू हो गए। प्रेस ने सरकारी नीति की कड़ी आलोचना की। एक नवयुवक ने रैंड तथा उसके सहयोगी लेफ्टिनेंट एर्स्ट (Ayerst) को अपनी गोली का शिकार बनाया। अंग्रेजों ने 18 मास का कठोर कारावास, अन्य राष्ट्रवादियों को मृत्युदण्ड तथा देश निर्वासन के कारण असंतोष की लहर दौड़ पड़ी।

④ धार्मिक और सामाजिक कारण :- इस समय भारत में धार्मिक पुनर्जागरण हो रहा था और उसके उन्नायक भारतीय सभ्यता और संस्कृति को उत्कृष्टतम मानते थे। वे विदेशी शासन को भारत के हितों के प्रतिकूल मानते थे। विवेकानन्द स्वतंत्रता के अभाव में भारत का आध्यात्मिक उत्थान असम्भव मानते थे। श्रीमति एनीबिसेण्ट के अनुसार समस्त हिन्दू व्यवस्था पाश्चात्य सभ्यता से बढ़कर है। बंकिमचन्द्र चटर्जी की रचना 'आनन्द मठ' ने भारतीयों में देश भक्ति की भावना का संचार किया।

⑤ भारत का आर्थिक शोषण :- शिक्षित भारतीयों में बेकारी से उत्पन्न राजनीतिक असंतोष तेजी से फैलने लगा क्योंकि ब्रिटिश सरकार शिक्षित व मध्यम वर्ग के लोगों के लिए नौकरी के लिए दरवाजे बन्द कर दिये थे। उच्च सरकारी पदों

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

पर केवल अंग्रेजों की ही नियुक्ति होती थी तथा भारतीय उद्योगों को भी नष्ट करने की नीति अपनायी। शत्रु विरोधी नीति के कारण भारतीयों का विदेशी शासकों की न्याय प्रियता व सच्चाई से विश्वास उठ गया तथा ब्रिटिश विरोधी भावनाएँ बढ़ गई।

(6) विदेशों में भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार :- ब्रिटिश उपनिवेशों में भारतीयों के साथ अमानुषिक व्यवहार किया जाता था। निश्चय रूप से दक्षिण अफ्रीका में जहाँ से लौटकर डॉक्टर बी. एस. मुंजे ने कहा था कि "हमारे शासक यह विश्वास नहीं करते कि हम भी मनुष्य हैं।" भारतीयों को एक बताये गये निश्चित स्थान पर उतरना पड़ता था, वे रात्रि को 9 बजे के बाद घर से बाहर नहीं निकल सकते थे, उन्हें रेल के प्रथम श्रेणी के डिब्बों में यात्रा करने की आज्ञा नहीं थी। भारत के शिक्षित वर्ग ने यह अनुभव किया कि यह दुर्व्यवहार भारत की पराधीनता के कारण किया जा रहा है और इस व्यवहार से छुटकारा पाने का एकमात्र मार्ग है कि भारत को स्वतंत्र कराया जाय।

(7) बाह्य घटनाओं का प्रभाव :- विदेशों में घटित घटनाओं से भी राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवादी विचारधारा को बहुत बल मिला। 1896 में अबीसीनिया की सेना ने इटली की बड़ी सेना को हरा दिया। 1904-05 में जापान ने महान रूस को हरा दिया। इन घटनाओं से भारतीयों को यह अहसास हुआ कि गोरी फौजें अजेय नहीं। आवश्यकता केवल देश प्रेम व बलिदान के लिए संगठित होने की है। जैरट ने लिखा है कि "इटली की हार से 1896 में तिलक के आन्दोलन को बहुत बल मिला।" जे. एन. सिंह ने लिखा है कि "मेजिनी (इटली का देशभक्त जिसने इटली का एकीकरण किया) के जीवन और उसके कार्यों पर भारतीय भाषाओं में पुस्तकें लिखी गयी, अनुवाद किये गये और भारत में राष्ट्रीय नेताओं ने अपने देश वासियों में स्वदेश प्रेम जाग्रत करने के लिए इटली के उदाहरण से काम लिया।

(8) लाल, बाल और पाल का विवेकशील नेतृत्व :- लाल, बाल और पाल ने उग्रवादी आन्दोलनों के प्रसार में सहयोग किया। बाल ने उदारवादियों की तरह विदेशी राज्य को भारत के लिए वरदान नहीं माना था और न ही ब्रिटिश सरकार के सामने गिड़गिड़ाने की नीति के समर्थक थे। इसके विपरीत वह विदेशी राज्य को भारतीयों की समस्त कठिनाइयों का मूल कारण समझते थे और उसकी उपेक्षा स्वदेशी राज्य को अधिक श्रेष्ठ मानते थे। उनके हृदय में विदेशी राज्य के लिए असीम घृणा थी। उन्होंने 15 जून 1897 को लिखा है कि "यदि हमारे घर में चोर घुस आएँ हममें उन्हें बाहर निकालने की सामर्थ्य न हो तो हमें बिना झिझक के उन्हें घर के अन्दर बन्द करके जला देना चाहिए।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

(9) हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान :- उग्रवादियों में हिन्दू धर्म के प्रति प्रेम तथा उत्साह था। वे पश्चिमी सभ्यता के घोर विरोधी थे। लाल, बाल और पाल हिन्दू धर्म के कट्टर अनुयायी थे। सांस्कृतिक नवजागरण की धारणा से भी इस आन्दोलन को बल मिला। बंकिम-चन्द्र-चटर्जी, रविन्द्रनाथ टैगोर, विवेकानंद आदि विद्वानों की रचनाओं ने नवयुवकों को देश और संस्कृति पर अभिमान करना सिखाया। उग्रवादी विचारक भारत की आध्यात्मिक श्रेष्ठता के सामने पश्चिमी सभ्यता को तुच्छ समझते थे। वे अतीत के गौरव से प्रेरणा लेते थे। उन्होंने आत्म-निर्भरता, विदेशी शासन का विरोध, कष्ट सहने तथा आत्मबलिदान के महान संकल्प किए। तिलक ने सन 1907 में कोलकाता के भाषण में कहा था कि "विदेशी शासन भारत के लिए अभिशाप है और नौकरशाही को दबाने के लिए प्रभावशाली आन्दोलन करना होगा।" तिलक जी ने महाराष्ट्र में 'गणपति पूजा' तथा शिवाजी उत्सवों का आयोजन किया। अखाड़ों तथा लाठी शिक्षण केन्द्रों की स्थापना की। श्रीमति एनी बेसेण्ट ने भी भारत के गौरवपूर्ण अतीत से प्रेरणा लेने का परामर्श दिया। बंकिमचन्द्र चट्टर्जी द्वारा रचित आनन्दमठ उग्रवादियों की 'गीता' बन गई।

(10) बंगाल का विभाजन :- लार्ड कर्जन के समय बंगाल एक बड़ा प्रान्त था। उसमें सारा बंगाल, उड़ीसा तथा बिहार सम्मिलित थे। इतने बड़े प्रान्त का शासन के लिए चुनौति था। इसलिए इसको बाँटना अनिवार्य था, परन्तु कर्जन का उद्देश्य न केवल शासन सुविधा के लिए बंगाल को बाँटना था, परन्तु वह हिन्दुओं और मुसलमानों में फूट डलवा कर बढ़ती हुई राष्ट्रीय भावनाओं को कुचलना चाहता था। इसके लिए उसने पूर्वी बंगाल के मुसलमानों को भड़काने का प्रयास किया, जहाँ उनका बहुमत था। इस प्रकार 'फूट डालो और शासन करो' के आधार पर उन्होंने बंगाल का विभाजन 16 अक्टूबर 1905 को कर दिया, जिसके कारण पूरे देश में इसकी तीव्र आलोचना किया गया। 16 अक्टूबर 1905 का दिन बंगाल और सारे देश में राष्ट्रीय शोक के रूप में मनाया गया। इस प्रकार लार्ड कर्जन ने अपनी मुर्खता और हठधर्मी से कुछ ही दिनों में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को उस चरम बिन्दु तक पहुँचा दिया, जिस तक पहुँचने में उसे अनेक वर्ष लग सकते थे। यह आन्दोलन सन 1911 तक चलता रहा जब तक कि ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम ने भारत आकर बंगाल के विभाजन को रद्द करने की घोषणा नहीं कर दी।

निष्कर्ष :- निष्कर्षतः उग्रवाद ने राष्ट्रीय आन्दोलन की ज्योति को प्रखर किया और जन-आन्दोलन की राजनीति की पृष्ठभूमि तैयार की जिसे आगे चलकर महात्मा गाँधी ने पूर्णतया अपना लिया। (समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान
डी० के० कालेज, डुमरॉव
दिनांक 06/08/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA